PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

अव्यय (अविकारी)

- अव्यय का शाब्दिक अर्थ होता है – जो व्यय न हो।
- जिनके रूप में लिंग , वचन , पुरुष , कारक , काल आदि की वजह से कोई परिवर्तन नहीं होता उसे अव्यय शब्द कहते हैं। अव्यय शब्द हर स्थिति में अपने मूल रूप में रहते हैं। इन शब्दों को अविकारी शब्द भी कहा जाता है।

  जैसे :-

  जब , तब , अभी ,अगर , वह, वहाँ , यहाँ , इधर , उधर , किन्तु , परन्तु , बल्कि , इसलिए , अतएव , अवश्य , तेज , कल , धीरे , लेकिन , चूँकि , क्योंकि आदि।

अव्यय के भेद -:

1. क्रियाविशेषण अव्यय-
2. संबंधबोधक अव्यय
3. समुच्चयबोधक अव्यय
4. विस्मयादिबोधक अव्यय
5. निपात अव्यय

1. क्रिया विशेषण अव्यय - जिन शब्दों से क्रिया(या शब्द) की विशेषता का पता चलता है उसे क्रिया विशेषण कहते है।

   तेज, अब, रात, धीरे-धीरे, प्रतिदिन, सुन्दर वहाँ, तक जल्दी, अभी, बहुत शब्द क्रिया विशेषण है।

   जैसे :-

   (i) साहिल रोज़ स्कूल जाता है। ('रोज़' शब्द 'जाता है' क्रिया की विशेषता उसका समय बतलाकर प्रकट करता है)

   (ii) लड़का ज़ोर से चिल्लाता है। ('ज़ोर' शब्द 'चिल्लाया' क्रिया की विशेषता उसका ढ़ंग बतलाकर प्रकट करता है)

   (iii) चील ने नीचे देखा। ('नीचे' शब्द 'देखा' क्रिया की विशेषता उसका ढ़ंग बतलाकर प्रकट करता है)

प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषण अव्यय के भेद-

1. साधारण क्रियाविशेषण अव्यय
2. संयोजक क्रियाविशेषण अव्यय
3. अनुबद्ध क्रियाविशेषण अव्यय

1. साधारण क्रियाविशेषण अव्यय -: जिन शब्दों का प्रयोग वाक्यों में स्वतंत्र रूप से किया जाता है उन्हें साधारण क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

जैसे :-

(i) हाय ! मै क्या करूँ।

(ii) अरे ! वह साँप कहां गया ?

2. संयोजक क्रियाविशेषण अव्यय -: जिन शब्दों का संबंध किसी उपवाक्य के साथ होता है उन्हें संयोजक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे :-

(i) जब अंकित ही नहीं तो मैं जी कर क्या करूंगी।

(ii) जहाँ पर अब समुद्र है वहाँ पर कभी जंगल था।

3. अनुबद्ध क्रियाविशेषण अव्यय -: जिन शब्दों का प्रयोग निश्चय के लिए किसी भी शब्द भेद के साथ किया जाता है उन्हें अनुबद्ध क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे :-

(i) मैंने उसे देखा तक नहीं।

(ii) आपके आने भर की देर है।

रूप के आधार पर क्रियाविशेषण अव्यय के भेद -:

1. मूल
2. यौगिक
3. स्थानीय

1. मूल -: जिन शब्दों में दूसरे शब्दों के मेल की जरूरत नहीं पडती उन्हें मूल क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे :-

(i) अचानक से सांप आ गया।

(ii) मैं अभी नही आया।

2. यौगिक -: जो शब्द दूसरे शब्द में प्रत्यय या पद जोड़ने से बनते हैं उन्हें यौगिक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे :-

(i) तुम रातभर में आ जाना।

(ii) वह चुपके से जा रहा था।

3. स्थानीय -: वे अन्य शब्द भेद जो बिना किसी परिवर्तन के विशेष स्थान पर आते हैं उन्हें स्थानीय क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे :-

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(i) वह अपना सिर पढ़ेगा।

(ii) तुम दौडकर चलते हो।

अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषण अव्यय के भेद (8 प्रकार)(मुख्यता प्रारम्भ के 4 प्रकार)-:

1. कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय
2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय
3. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय
4. रीतिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय
5. संख्यावाचक क्रियाविशेषण अव्यय
6. स्वीकारवाचक क्रियाविशेषण अव्यय
7. निषेधवाचक क्रियाविशेषण अव्यय
8. प्रश्नवाचक क्रियाविशेषण अव्यय

1. कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय -:

- जिन अव्यय शब्दों से कार्य के व्यापार के होने का पता चले उसे कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।
- जहाँ पर आजकल , अभी , तुरंत , रातभर , दिन , भर , हर बार , कई बार , नित्य , कब , यदा , कदा , जब , तब , हमेशा , तभी , तत्काल , निरंतर , शीघ्र पूर्व , बाद , पीछे , घड़ी घड़ी-, अब , तत्पश्चात , तदनन्तर , कल , फिर , कभी , प्रतिदिन , दिनभर , आज , परसों , सायं , पहले , सदा , लगातार आदि आते है वहाँ पर कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय होता है।

  जैसे :-

  (i) वह नित्य टहलता है।

  (ii) वे कब गए।

  (iii) साक्षी कल जाएगी।

  (iv) वह प्रतिदिन पढ़ता है।

  (v) दिनभर वर्षा होती है।

  (vi) कृष्ण कल जायेगा।

2. स्थान क्रियाविशेषण अव्यय -:

- जिन अव्यय शब्दों से कार्य के व्यापार के होने के स्थान का पता चले उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।
- जहाँ पर यहाँ , वहाँ , भीतर , बाहर , इधर , उधर , दाएँ , बाएँ , कहाँ , किधर , जहाँ , पास , दूर , अन्यत्र , इस ओर , उस ओर , ऊपर , नीचे , सामने , आगे , पीछे , आमने आते है वहाँ पर स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय होता है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

जैसे :-

(i) मैं कहाँ जाऊं ?

(ii) मोहनी किधर गई ?

(iii) सुनील नीचे बैठा है।

(iv) इधर मत देखो। उधर-

(v) वह आगे चला गया।

(vi) उधर मत जाओ।

3. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय -:

- जिन अव्यय शब्दों से कार्य के व्यापार के परिणाम का पता चलता है उसे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं। जिन अव्यय शब्दों से नापतौल का पता चलता है।
- जहाँ पर थोडा , काफी , ठीक , ठाक , बहुत , कम , अत्यंत , अतिशय , बहुधा , थोडा थोडा-, अधिक , अल्प , कुछ , पर्याप्त , प्रभूत , न्यून , बूंद बूंद-, स्वल्प , केवल , प्राय :, अनुमानत :, सर्वथा , उतना , जितना , खूब , तेज , अति , जरा , कितना , बड़ा , भारी , अत्यंत , लगभग , बस , इतना , क्रमश : आदि आते हैं वहाँ परपरिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे :-

(i) मैं बहुत घबरा रहा हूँ।

(ii) वह अतिशय व्यथित होने पर भी मौन है।

(iii) उतना बोलो जितना जरूरी हो।

(iv) अवधेश खूब पढ़ता है।

(v) तेज गाड़ी चल रही है।

(vi) संजना बहुत बोलती है।

(vii) कम खाओ।

4. रीतिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय -:

- जिन अव्यय शब्दों से कार्य के व्यापार की रीति या विधि का पता चलता है उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।
- जहाँ पर ऐसे , वैसे , अचानक , इसलिए , कदाचित , यथासंभव , सहज , धीरे , सहसा , एकाएक , झटपट , आप ही , ध्यानपूर्वक , धडाधड , यथा , ठीक , सचमुच , अवश्य , वास्तव में , निस्संदेह , बेशक , शायद , संभव है , हाँ , सच , जरुर , जी , अतएव , क्योंकि , नहीं , न , मत , कभी नहीं , कदापि नहीं , फटाफट , शीघ्रता , भली भांति-, ऐसे , तेज , कैसे , ज्यों , त्यों आदि आते हैं वहाँ पर रीतिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे :-

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(i) जरा , सहज एवं धीरे चलिए।

(ii) हमारे सामने शेर अचानक आ गया।

(iii) अनिल ने अपना कार्य फटाफट कर दिया।

(iv) सलमान शीघ्रता से चला गया।

(v) वह पैदल चलता है।

5. संख्यावाचक - जिन शब्दों से क्रिया के होने की संख्या का ज्ञान हो।

जैसे -

मैं दो बार यह किताब पढ़ चुका हूँ।

6. स्वीकार वाचक - जिन शब्दों से क्रिया के होने की स्वीकृति प्रकट हो।

जैसे -

अच्छा, वह पास हो गया।

हाँ, मैं तो जाऊँगा।

7. निषेध वाचक - जहाँ पर निषेध का भाव उत्पन्न हो

जैसे -

मैं नहीं आ सकती।

तुम किताब मत लेना।

8. प्रश्नवाचक - जहाँ पर प्रश्नसूचक शब्द व चिह्न का प्रयोग हो।

जैसे -

तुम कहाँ गये थे?

प्रिया क्यों गई थी?

2. संबंधबोधक अव्यय -:

- जिन अव्यय शब्दों के कारण संज्ञा के बाद आने पर दूसरे शब्दों से उसका संबंध बताते हैं उन शब्दों को संबंधबोधक शब्द कहते हैं। ये शब्द संज्ञा से पहले भी आ जाते हैं।
- जहाँ पर बाद , भर , के ऊपर , की और , कारण , ऊपर , नीचे , बाहर , भीतर , बिना , सहित , पीछे , से पहले , से लेकर , तक , के अनुसार , की खातिर , के लिए आते हैं वहाँ पर संबंधबोधक अव्यय होता है।

जैसे :-

मैं विद्यालय तक गया।

स्कूल के समीप मैदान है।

धन के बिना व्यवसाय चलाना कठिन है।

सूरज के भरोसे यह काम बिगड़ गया।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

मैं पूजा से पहले स्नान करता हूँ।

मैंने घर के सामने कुछ पेड़ लगाये हैं।

उसका साथ छोड़ दीजिये।

छत पर कबूतर बैठा है।

राम भोजन के बाद जायेगा।

हर्ष दिन भर खेलता है।

छत के ऊपर राम खड़ा है।

प्रयोग की पुष्टि से संबंधबोधक अव्यय के भेद -:

1. सविभक्तिक
2. निर्विभक्तिक
3. उभय विभक्ति

1. सविभक्तिक -: जो अव्यय शब्द विभक्ति के साथ संज्ञा या सर्वनाम के बाद लगते हैं उन्हें सविभक्तिक कहते हैं। जहाँ पर आगे , पीछे , समीप , दूर , ओर , पहले आते हैं वहाँ पर सविभक्तिक होता है।

जैसे :-

(i) घर के आगे स्कूल है।

(ii) उत्तर की ओर पर्वत हैं।

(iii) लक्ष्मण ने पहले किसी से युद्ध नहीं किया था।

2. निर्विभक्तिक -: जो शब्द विभक्ति के बिना संज्ञा के बाद प्रयोग होते हैं उन्हें निर्विभक्तिक कहते हैं। जहाँ पर भर , तक , समेत , पर्यन्त आते हैं वहाँ पर निर्विभक्तिक होता है।

जैसे :-

(i) वह रात तक लौट आया।

(ii) वह जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारी रहा।

(iii) वह बाल बच्चों समेत यहाँ आया।

3. उभय विभक्ति -: जो अव्यय शब्द विभक्ति रहित और विभक्ति सहित दोनों प्रकार से आते हैं उन्हें उभय विभक्ति कहते हैं। जहाँ पर द्वारा , रहित , बिना , अनुसार आते हैं वहाँ पर उभय विभक्ति होता है।

जैसे :-

(i) पत्रों के द्वारा संदेश भेजे जाते हैं।

(ii) रीति के अनुसार काम होना है।

3. समुच्चयबोधक अव्यय -:

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- जो शब्द दो शब्दों , वाक्यों और वाक्यांशों को जोड़ते हैं उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इन्हें योजक भी कहा जाता है। ये शब्द दो वाक्यों को परस्पर जोड़ते हैं।
- जहाँ पर और , तथा , लेकिन , मगर , व , किन्तु , परन्तु , इसलिए , इस कारण , अत :, क्योंकि , ताकि , या , अथवा , चाहे , यदि , कि , मानो , आदि , यानि , तथापि आते हैं वहाँ पर समुच्चयबोधक अव्यय होता है।

जैसे :-

सूरज निकला और पक्षी बोलने लगे।

छुट्टी हुई और बच्चे भागने लगे।

किरन और मधु पढने चली गईं।

प्राची पढने में तो तेज है परन्तु शरीर से कमजोर है।

तुम जाओगे कि मैं जाऊं।

माता जी और पिताजी।

मैं पटना आना चाहता था लेकिन आ न सका।

तुम जाओगे या वह आयेगा।

समुच्चयबोधक अव्यय के भेद -:

1. समानाधिकरण(संयोजक) समुच्चयबोधक अव्यय
2. व्यधिकरण(विभाजक) समुच्चयबोधक अव्यय

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय -: जिन शब्दों से समान अधिकार के अंशों के जुड़ने का पता चलता है उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

जहाँ पर किन्तु , और , या , अथवा , तथा , परन्तु , व , लेकिन , इसलिए , अत :, एवं आते है वहाँ पर समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय होता है।

जैसे :-

(i) कविता और गीता एक कक्षा में पढ़ते हैं।

(ii) मैं और मेरी पुत्री एवं मेरे साथी सभी साथ थे।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय -: जिन अव्यय शब्दों में एक शब्द को मुख्य माना जाता है और एक को गौण। गौण वाक्य मुख्य वाक्य को एक या अधिक उपवाक्यों को जोड़ने का काम करता है। जहाँ पर चूँकि , इसलिए , यद्यपि , तथापि , कि , मानो , क्योंकि , यहाँ , तक कि , जिससे कि , ताकि , यदि , तो , यानि आते हैं वहाँ पर व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय होता है।

जैसे :-

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(i) संगम बीमार है इसलिए वह आज नहीं आएगा।

(ii) यदि तुम अपनी भलाई चाहते हो तो यहाँ से चले जाओ।

(iii) मैंने दिन में ही अपना काम पूरा कर लिया ताकि मैं शाम को जागरण में जा सकूं।

4. विस्मयादिबोधक अव्यय -:

- जिन अव्यय शब्दों से हर्ष , शोक , विस्मय , ग्लानी , लज्जा , घर्णा , दुःख , आश्चर्य आदि के भाव का पता चलता है उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। इनका संबंध किसी पद से नहीं होता है। इसे घोतक भी कहा जाता है। विस्मयादिबोधक अव्यय में चिन्ह लगाया जाता है (!)

जैसे :-

वाह ! क्या बात है।

हाय ! वह चल बसा।

आह ! क्या स्वाद है।

अरे ! तुम यहाँ कैसे।

अरे राम! कैसे हुआ।

हट! निकल यहाँ से।

- ध्यान दे - इन दिनों के अन्त में विस्मायादि बोधक चिह्न(!) अवश्य आता है। जैसे - अरे!, ओह!, क्या!, आह!, हाय-हाय!, अरे राम!, अफसोस!, छिः छिः!, धिक्-धिक्!, हट!, वाह!, आदि

भाव के आधार पर विस्मयादिबोधक अव्यय के भेद -:

(1) हर्षबोधक

(2) शोकबोधक

(3) विस्मयादिबोधक

(4) तिरस्कारबोधक

(5) स्वीकृतिबोधक

(6) संबोधनबोधक

(7) आशिर्वादबोधक

(1) हर्षबोधक -: जहाँ पर अहा !, धन्य !, वाह !वाह-, ओह !, वाह !, शाबाशआते हैं ! वहाँ पर हर्षबोधक होता है।

(2) शोकबोधक -: जहाँ पर आह !, हाय !, हाय !हाय-, हा, त्राहि !त्राहि-, बाप रेआते हैं वहाँ पर ! शोकबोधक आता है।

(3) विस्मयादिबोधक -: जहाँ पर हैं !, ऐं !, ओहो !, अरे वाहआते हैं वहाँ पर विस्मयादिबोधक होता ! है।

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(4) तिरस्कारबोधक -: जहाँ पर छि !:, हट !, धिक् !, धत !, छि !:छि:, चुपआते हैं वहाँ पर ! तिरस्कारबोधक होता है।

(5) स्वीकृतिबोधक -: जहाँ पर हाँ !हाँ-, अच्छा !, ठीक !, जी हाँ !, बहुत अच्छाआते हैं वहाँ पर ! स्वीकृतिबोधक होता है।

(6) संबोधनबोधक -: जहाँ पर रे !, री !, अरे !, अरी !, ओ !, अजी !, हैलोआते हैं वहाँ पर ! संबोधनबोधक होता है।

(7) आशीर्वादबोधक -: जहाँ पर दीर्घायु हो !, जीते रहोआते हैं वहाँ पर आशिर्वादबोधक होता है। !

5. निपात अव्यय -:

- जो वाक्य में नवीनता या चमत्कार उत्पन्न करते हैं उन्हें निपात अव्यय कहते हैं। जो अव्यय शब्द किसी शब्द या पद के पीछे लगकर उसके अर्थ में विशेष बल लाते हैं उन्हें निपात अव्यय कहते हैं। इसे अवधारक शब्द भी कहते हैं। जहाँ पर ही , भी , तो , तक ,मात्र , भर , मत , सा , जी , केवल आते हैं वहाँ पर निपात अव्यय होता है।

जैसे :-

प्रशांत को ही करना होगा यह काम।

सुहाना भी जाएगी।

तुम तो सनम डूबोगे ही , सब को डुबाओगे।

वह तुमसे बोली तक नहीं।

पढाई मात्र से ही सब कुछ नहीं मिल जाता।

तुम उसे जानता भर हो।

राम ने ही रावण को मारा था।

रमेश भी दिल्ली जाएगा।

तुम तो कल जयपुर जाने वाले थे।

राम ही लिख रहा है।

क्रिया विशेषण और संबन्धबोधक अव्यय मे अंतर -

- जब अव्यय शब्दों का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम के साथ किया जाता है तब ये संबंधबोधक होते हैं और जब अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं तब ये क्रिया विशेषण होते हैं।-

जैसे :-

बाहर जाओ।

घर से बाहर जाओ।

उनके सामने बैठो।

मोहन भीतर है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

घर के भीतर सुरेश है।

बाहर चले जाओ।

- 'सत्य की सदा जीत होती है। विजय नहीं होती है जहां पवित्रता और प्रेम है।जब हम कभी वीरों का हाल सुनते हैं, तब हमारे अन्दर भी वीरता की लहरें उठती हैं, परन्तु प्रायः वे चिरस्थायी नहीं होती।'

सदा - कालवाचक क्रियाविशेषण

वहीं - स्थानवाचक क्रियाविशेषण

जहाँ - स्थानवाचक क्रियाविशेषण

जब - कालवाचक क्रियाविशेषण

तब - कालवाचक क्रियाविशेषण

प्रायः - रीतिवाचक क्रियाविशेषण